पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय सुनील कुमार बहराइच, उत्तर-प्रदेश**,**

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय अन्नु राठौड़ रूद्रांजली,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

ज्ञान के मोती

धन्यवाद पत्र

प्रिय गणेश दादु पवार,

संपादक - कुशाग्र जैन

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय महेश 'काव्यप्रेमी' सलुम्बर,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय सुनील कुमार चाष्टा,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय शितल शंकर जाधव,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय गजेन्द्र मेनारिया ब्राहमण टाँटरमाला,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

ज्ञान के मोती

धन्यवाद पत्र

प्रिय समरथ मेनारिया,

संपादक - कुशाग्र जैन

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

ज्ञान के मोती

धन्यवाद पत्र

संपादक - कुशाग्र जैन

प्रिय मनोरमा जैन पाखी,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती"

पंजीयन संख्या - U88900RJ2023NPL086494

शिवाग्र कला मंच फाउंडेशन

धन्यवाद पत्र

प्रिय छैल बिहारी शर्मा "जनप्रिय,

"ज्ञान के मोती" (ISBN: 978-81-966404-9-1) नामक इस संपादित काव्य संग्रह के प्रकाशन के अवसर पर, हम हृदय की गहराइयों से आप सभी का आभार व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक, जो 'गुरु महिमा' और 'ज्ञान' के शाश्वत विषयों को समर्पित है, आपके बिना अधूरी रहती।

आपकी रचनाएँ इस संग्रह की आत्मा हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक कविता, एक अमूल्य 'मोती' के समान है, जिसने इस माला को पिरोया है। आपने अपनी कलम से गुरु के विभिन्न रूपों - उनके ज्ञान, उनके त्याग, उनके प्रेम और उनके मार्गदर्शन - को जीवंत किया है। आपकी कविताओं ने इस पुस्तक को न केवल साहित्यिक गरिमा प्रदान की है, बल्कि इसे पाठकों के लिए प्रेरणा और चिंतन का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बनाया है।

आज के समय में, जब सच्चे ज्ञान और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता सर्वाधिक है, आपकी कविताएँ प्रकाशपुंज बनकर समाज को दिशा दिखाएंगी। हमें विश्वास है कि आपकी रचनाएँ पाठकों के हृदय को स्पर्श करेंगी और उन्हें अपने जीवन में गुरु के महत्व को पहचानने तथा आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आपके प्रति अपनी असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह पुस्तक हमारी एक साझा यात्रा का परिणाम है, और हमें गर्व है कि आप इस यात्रा के एक अभिन्न अंग रहे हैं।

आपके भविष्य के साहित्यिक प्रयासों के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि आपका सृजनात्मक प्रवाह इसी तरह बना रहेगा और आप अपनी लेखनी से समाज को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे।

साभार,

दिनांक: 10 जुलाई, 2025

कुशाग्र जैन

संपादक "ज्ञान के मोती